



Class: VIII	Department: Hindi (2 nd Lang)	Date :07.10.26
प्रश्नोत्तर	Topic: पाठ6 एक टोकरी भर मिट्टी	Note: Pls. write in your Hindi note book

अति लघु प्रश्न-उत्तर

1. ज़मींदार ने झोंपड़ी पर कब्ज़ा कैसे किया?

उत्तर: ज़मींदार ने वकीलों की मदद से अदालत द्वारा झोंपड़ी पर कब्ज़ा कर लिया और वृद्धा को वहाँ से निकाल दिया।

2. वृद्धा के जीने का एकमात्र सहारा कौन थी?

उत्तर: वृद्धा के जीने का एकमात्र सहारा उसकी पाँच बरस की पोती थी।

3. श्रीमान पड़ोसी की इच्छा सुनकर वृद्धा की क्या दशा हो गई?

उत्तर: श्रीमान पड़ोसी की इच्छा सुनकर वृद्धा मुरझाईसी हो गई थी।--

4. अंत में ज़मींदार ने क्या किया?

उत्तर: अपने कृतकर्म का पश्चाताप कर ज़मींदार साहब ने उस वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।

5 वृद्धा ने मिट्टी ले जाने की अनुमति कैसे माँगी ?

उत्तर: वृद्धा ने मिट्टी ले जाने की अनुमति विनती और नम्रता से माँगी ।

लघु प्रश्नोत्तर

1. वृद्धा ने ज़मींदार से एक टोकरी मिट्टी ले जाने की अनुमति क्यों माँगी?

उत्तर: वृद्धा की पोती झोंपड़ी छूटने के बाद खाना-पीना छोड़ चुकी थी। वृद्धा ने सोचा कि झोंपड़ी की मिट्टी से चूल्हा बनाकर रोटी पकाएगी। इससे पोती को अपने घर की याद आएगी और वह खाना खाने लगेगी।

2. ज़मींदार टोकरी भर मिट्टी क्यों नहीं उठा सका?

उत्तर: ज़मींदार ने टोकरी उठाने के लिए पूरी शक्ति लगा दी, फिर भी वह उसे एक हाथ ऊँचा नहीं उठा सका। टोकरी का भार उसकी शक्ति से बाहर था। इसलिए उसने स्वीकार किया कि वह टोकरी नहीं उठा सकता।

3. वृद्धा की बातों का ज़मींदार पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: वृद्धा ने ज़मींदार को समझाया कि जब वह एक टोकरी मिट्टी का भार नहीं उठा सकता, तो झोंपड़ी की हजारों टोकरियों का भार जीवनभर कैसे उठाएगा। उसकी बातों से ज़मींदार को अपनी भूल का एहसास हुआ और उसे पश्चाताप हुआ।

4. जमींदार वृद्धा की झोंपड़ी क्यों हटाना चाहता था?

उत्तर: वृद्धा की झोंपड़ी जमींदार के महल के पास थी। जमींदार महल का अहाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाना चाहता था। इसलिए वह वृद्धा की झोंपड़ी हटाना चाहता था।

5. वृद्धा का झोंपड़ी से इतना लगाव क्यों था?

उत्तर: झोंपड़ी में वृद्धा की पूरी आयु गुजरी थी। इसमें वह काफी लंबे समय से रह रही थी। इसी में उसने अपने पति, बेटे और बहू को खोया था।

6. वृद्धा की पोती खाना क्यों नहीं खा रही थी?

उत्तर: वृद्धा की पोती झोंपड़ी टूटने से दुखी थी। वहीं उसका घर था। अतः उसने ज़िद कर रखी थी कि अपने घर जाकर ही खाना खाएगी।

7. जमींदार से टोकरी न उठने पर वृद्धा ने जमींदार से क्या कहा?

उत्तर: वृद्धा ने कहा— “महाराज, नाराज न हों... आपसे तो एक टोकरी भर मिट्टी उठाई नहीं जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी हैं। उसका भार आप जन्म भर कैसे उठा सकेंगे?”

दीर्घ प्रश्नोत्तर

1. वृद्धा ने किस प्रकार अपनी बुद्धिमानी से जमींदार को उसकी गलती का एहसास कराया?

उत्तर: वृद्धा ने सीधे जमींदार से झगड़ा नहीं किया। उसने विनम्रता से एक टोकरी मिट्टी ले जाने की अनुमति माँगी और जमींदार से टोकरी उठाने को कहा। जब वह टोकरी नहीं उठा सका, तब वृद्धा ने कहा कि जब एक टोकरी का भार नहीं उठा सकते, तो हजारों टोकरियों का भार कैसे उठाएँगे। इससे जमींदार को अपनी गलती समझ में आई।

2. कहानी के अंत में जमींदार के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर: आरंभ में जमींदार धन के अहंकार में डूबा हुआ था। उसने वृद्धा की इच्छा की परवाह नहीं की और उसकी झोंपड़ी पर कब्ज़ा कर लिया। टोकरी उठाने में असफल होने और वृद्धा की बात सुनने के बाद उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने अपने कृत्य पर पश्चाताप किया, वृद्धा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस कर दी।

3. 'एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी से हमें क्या संदेश मिलता है?

उत्तर: कहानी हमें सिखाती है कि धन और अहंकार के कारण किसी के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए। घर और मिट्टी से मनुष्य का गहरा भावनात्मक लगाव होता है। सच्ची शक्ति दया, न्याय और मानवीयता में है। अपनी गलती का एहसास होने पर उसे स्वीकार करके सुधार करना चाहिए।

=====